1.

2. हॉफडिंग :— "सुख-दुःख की उत्पत्ति के कारणों के साथ संबद्ध करके संवेग को परिभाषित किया जा सकता है।"

3. सली :— "संवेग ऐंद्रिक एवं भावात्मक प्रवृत्ति की लय की अवस्था का प्रतिनिधित्व करनेवाले विषयों का पुंज है।"

4. वार्ड :— "संवेग पूर्णरूपेण मनोविकृति की अवस्था है जिसमें संज्ञानात्मक, सुख-दुःखात्मक भाव तथा क्रियात्मक प्रवृत्तियाँ सन्निहित होती हैं।"

5. वुडवर्थ :— "प्राणी की उत्तेजित होने की स्थिति को संवेग कहते हैं।"

6. वाटसन :— "संवेग एक प्रकार का अनुकूल व्यवहारों का प्रतिरूप है जिसमें संपूर्ण शारीरिक तंत्रों और विशेषकर अंतरावयवों एवं ग्रंथियों में भारी परिवर्तन होते हैं।"

7. यंग, पी० टी० :— "संवेग प्राणी में उत्पन्न पूर्णरूप से तीक्ष्ण विक्षोभ की अवस्था को कहते हैं जिसकी उत्पत्ति मनोवैज्ञानिक कारणों से होती है तथा जिसमें व्यवहार, चेतन अनुभव और अंतरावयवों की क्रियाएँ सम्मिलित रहती हैं।"

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं में पी० टी० यंग द्वारा दी गई परिभाषा सबसे उपयुक्त है।

Next day.

Hrishi Kesh lal
Deptt – Psychology.
B.M.C. Rahika